काजू उद्योग के श्रमिक महिलाओं की आर्थिक स्थिति का सामाजिक जीवन पर प्रभाव

(बस्तर जिले के बकावंड क्षेत्र के विशेष संदर्भ में)

* डॉ. प्रीति मिश्रा, **श्रीमती विनीता सिंह (पाल)

iLrkouk&स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व महिलाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय बनी हुई थी, वह समाज में फैली कई प्रकार की रूढ़ियां कुप्रथा जैसी विसंगतियों का शिकार थी जिनमें सती प्रथा बाल विवाह आदि प्रथाएं प्रमुख थी जिसने महिलाओं को पुरूष के ‘‘अधीन’’ बना दिया था उन्हें घर तक ही सीमित रखा जाने लगा तथा पिछड़ेपन व अज्ञानता की जंजीरों ने इसे जकड़ लिया। Lor=rk ikfIr ds ckn ls ukjh ds Lo:i esa ifjorZu vk;k] f’k{kk ds lkFk&lkFk ukjh ?kj dh pkj fnokjh ls fudydj iq:"kksa ds lkFk d/ks ls d/kk feykdj dk;Z djus yxh vkj orZeku esa bl iq:"k iz/kku lekt ds fodkl dk;ksZa esa efgykvksa dh lgHkkfxrk ds fcuk okfNr y{; ikIr dj ikuk vR;Ur dfBu dk;Z gS bl ckr esa dksbZ lUnsg ugha gS fd efgyk,a ikjHk ls gh vkfFkZd :i ls vkRefuHkZj jgh gS [ksrksa esa etnwjh djus okyh fuj{kj efgyk Hkh vFkksZiktZu dj ifjokj dk vkfFkZd enn djrh gS blh izdkj lCth Qy QYyh ;k puk cspus okyh efgyk,a Hkh viuk futh is’ks ds }kjk vFkksZikTkZu djrh jgh gS vk/kqfud f’k{kk ds c<rs egRo uxjhdj.k rFkk vk/kkSfxdj.k dh izfd;k ds lkFk lkFk dEI;wVj dk;Z esa efgykvksa ds fy, jkstxkj ds vusd }kj [kksy fn, gSA बड़े–बड़े शहरों में जहां महिलाएं अच्छी नौकरियां कर रही हैं वहीं निम्न वर्ग की महिलायें छोटे–छोटे उद्योगों में कार्य करके अपने व अपने परिवार का भरण पोषण कर रही है। भारत एक कृषि प्रध ाान देश है। जनसंख्या के दो तिहाई लोगों की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है जिसमें महिलाओं की भूमिका विशेष रूप से संलग्न है इसके अतिरिक्त कारखानों बागानों उद्योगों बांस उद्योगों आदि इनमें 80 प्रतिशत महिलाएं ही कार्य करती है। कमलनाथ (1968) ने अपने अध यन में पाया कि भारत में महिला श्रमिक अधिकतर कृषि क्षेत्र व कुटीर उद्योग धंधे अथवा सेवाक्षेत्र में क्रियाशील है। नगरीय क्षेत्रों में महिलाओं में श्रम सहभागिता, ग्रामीण महिलाओं की तुलना में अपेक्षाकृत कम है। इसी तरह शिक्षित महिलाओं में श्रम सहभागिता की दर अशिक्षित महिलाओं में तुलना में कम है। प्रस्तुत अध्ययन में बकावंड क्षेत्र के काजू उद्योग में कार्यरत महिला श्रमिकों की आर्थिक स्थिति का सामाजिक जीवन पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। साथ ही इन श्रमिकों की आर्थिक स्थिति शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन, निर्धारित वेतन आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक पक्ष व उनकी समाज में स्थिति को जानने का प्रयास किया गया है।

Jfed efgykvksa }kjk fd;s tkus okys dk;Z dk Lo:i&इसके अंतर्गत काजू उद्योग में कार्यरत महिलाएं पेड़ से टूट कर गिरे हुए काजू बीनने के साथ–साथ उद्योग में उबाले गए काजू के ग्रेडिंग का कार्य करती है। v/;;u dk mn~ns’;&काजू उद्योग में कार्यरत महिला श्रमिकों की आर्थिक स्थिति का सामाजिक जीवन पर प्रभाव का अध्ययन करना तथा उचित निष्कर्ष प्राप्त कर उनकी समस्याओं के निराकरण हेतु आवश्यक सुझाव देना। v/;;u {ks= dk ifjp;&बस्तर जिले के बकावंड क्षेत्र के भेजरीपदर गांव में काजू उद्योग स्थापित है जिसमें लगभग 100 मजदूर महिलाएं कार्य करती हैं वहीं से लगभग 3 कि.मी. दूर एवं आसपास के क्षेत्रों में काजू के पेड़ हैं जहां से कच्चा माल प्राप्त होता है और आसपास की महिलाएं इन उद्योगों में कार्य करने आती है।

v/;;u i)fr&प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक स्त्रोतों के अंतर्गत काजू उद्योग के श्रमिकों से स्वयं मिलकर साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से प्रश्न पूछकर सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, सांस्क तिक, जातिगत, शैक्षणिक, धार्मिक, व्यवसायिक एवं आयु संबंधी प भठभूमि को जानने का प्रयास किया गया है। द्वितीयक स्त्रोतों में प्रमुख रूप से काजू उद्योग की महिला श्रमिकों के संबंध में उपलबध प्रलेखों, ग्रंथों, साहित्य मंडल, प्रबंध कार्यालयीन दस्तावेजों द्वारा तथ्यों एवं सूचनाएं एकत्र की गई है। बस्तर जिले के बकावंड क्षेत्र के काजू उद्योग की श्रमिक महिलाओं का अध्ययन उद्देश्यपूर्ण अध्ययन पद्धति के आधार पर संकलित समर्थकों के माध्यम से किया गया है एवं अध्ययन हेतु 30 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। v/;;u ls ikIr rF;ksa dk fo’ys"k.k&वर्तमान में महिलाएं पुरूषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने को प्रयासरत हैं। महिलाएं पुरूषों से अधिक परिश्रम के कार्यों को करते हुए पारिवारिक दायित्वों का निर्वाह भी करती है। इसी संदर्भ में अध्ययनगत समूह के उत्तरदाताओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति का विश्लेषण किया गया है जिससे निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए–

rkfydk Øekad&1

mRrjnkrkvksa dh vk;q

Ø-	vk;q o"kZ esa	vkofRr	izfr’kr
01	15–25	12	40
02	26–35	10	33.34
03	36–45	5	16.66
04	46–55	3	10

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि ज्यादातर 40 प्रतिशत महिलाएं 15 से 25 वर्ष की है, व 33.34 प्रतिशत महिलाएं 26 से 35 वर्ष की एवं 16. 66 प्रतिशत महिलाएं 36 से 45 वर्ष की तथा सबसे कम मात्र 10 प्रतिशत महिलाएं 46 से 55 वर्ष की है अतः हम कह सकते हैं कि अध ययनगत समूह में किशोर एवं युवा महिलाएं अधिक संख्या में कार्य करती है।

rkfydk dzekad 02

mRrjnkrkvksa dh tkfr

Ø-	tkfr	vkofRr	izfr’kr
01	सतनामी	12	40
02	गोंड	5	16.6
03	भतरा	5	16.7
04	महरा	3	10
05	कसेर	3	10
06	हल्बा	2	6.7
	कुल योग	30	100

इसी प्रकार उत्तरदाताओं के जाति संबंधी विश्लेषण में

* प्राध्यापक, छत्तीसगढ़ स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय - रायपुर
** श्शोध छात्र, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

यह पाया गया कि उत्तरदाताओं में क्षेत्र की लगभग सभी जाति की महिलाएं कार्य करती है। जिनमें सर्वाधिक 40 प्रतिशत सतनामी, 16.6 प्रतिशत तथा 16.7 प्रतिशत उत्तरदाता क्रमशः गोंड़ व भतरा व 10–10 प्रतिशत उत्तरदाता महरा एवं कसेर जाति के हैं तथा सबसे कम 6.7 प्रतिशत हल्बा जाति की महिला श्रमिक है।

rkfydk Øekd&3

mRrjnkrkvks dh 'kS{kf.kd fLFkfr

क्र.	शिक्षा	आवृत्ति	प्रतिशत
01	अशिक्षित	16	53.3
02	प्राथमिक	10	33.3
03	हाईस्कूल	4	13.4
	कुल योग	30	100

छत्तीसगढ़ राज्य शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़ा माना जाता है यहां की कुल साक्षरता 65.18 प्रतिशत है जिसमें महिला साक्षरता केवल 52.40 प्रतिशत तथा पुरूष साक्षरता 77.86 प्रतिशत है परंतु अध्ययन क्षेत्र के बस्तर जिले का साक्षरता प्रतिशत 45.48 प्रतिशत हैं जो कि अत्याधिक निम्न है जिसमें महिला साक्षरता 32.17 प्रतिशत तथा पुरूष साक्षरता 57.09 प्रतिशत है। उत्तरदाताओं की शैक्षणिक पृष्ठभूमि संबंधी विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अधिकांश 53.3 प्रतिशत महिला उत्तरदाता अशिक्षित हैं 33.3 प्रतिशत प्राथमिक स्तर तक तथा सबसे कम 13.4 प्रतिशत हाईस्कूल तक ही शिक्षित हैं। अतः हम कह सकते हैं कि क्षेत्र में महिला शिक्षा का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम है।

rkfydk Øekd&4

mRrjnkrkvks dk osru

Ø-	vk; o"kkZ esa	vkofRr	izfr'kr
01	0 से 1000 तक	12	40 प्रतिशत
02	1001 से 2000 तक	13	43.3 प्रतिशत
03	2001 से 3000 तक	5	16.7 प्रतिशत
04	3001 से अधिक	–	–
	कुल योग	30	100

अध्ययनगत समूह की महिला श्रमिकों के वेतन संबंधी विश्लेषण से पता चलता है सर्वाधिक 43.3 प्रतिशत महिलाएं लगभग 1001 रूपये से 2000 रूपये तक मासिक आय अर्जित कर लेती हैं, एवं सबसे कम 16.7 प्रतिशत महिलाएं लगभग 2001 रूपये से 3000 रूपये तक ही आय अर्जित कर पाती है। इससे स्पष्ट होता है कि समूह में महिलाओं की मासिक आय उनके एवं परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उचित रूप से सहायक है। तथा विश्लेषण से यह भी ज्ञात हुआ है कि सर्वाधिक 90 प्रतिशत उत्तरदाताओं की अर्जित आय से उनके परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई है तथा मात्र 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं की स्थिति पूर्वानुसार है चूंकि अर्जित आय का सर्वाधिक हिस्सा महिलाएं घर की सभी आवश्यकताओं जैसे भोजन, कपड़ा, मनोरंजन स्वास्थ्य इत्यादि पर व्यय करती हैं तथा वैवाहिक परिस्थिति संबंधी विश्लेषण से यह पाया गया कि अधिकांश 50 प्रतिशत महिलाएं विवाहित जबकि 20 प्रतिशत महिलाएं अविवाहित हैं व 16.6 प्रतिशत महिलाएं विधवा तथा मात्र 13.4 प्रतिशत महिलाएं परित्यक्ता हैं।

v/;;uxr mRrjnkrkvksa dh izeq[k leL;k;sa&काजू उद्योग में कार्यरत महिलाओं की समस्याओं में प्रमुख समस्या, मजदूरी संबंधी है जिसमें उनके कार्य के प्रतिफल स्वरूप उचित वेतन संबंधी संतुष्टि का अभाव परिलक्षित होता है। भेजरीपदर गांव एवं आसपास के गांव में और कोई उद्योग न होने एवं भरण पोषण हेतु कृषि के अतिरिक्त अन्य कोई साधन न होने की वजह से मजबूरीवश इन महिलाओं को मालिक की शर्तों के अनुरूप ही कार्य करना पड़ता है।

leL;kvksa ds fujkdj.k gsrq lq>ko &

काजू उद्योग में कार्यरत महिलाओं की प्रमुख समस्या वेतन संबंधी है इसके लिए उन्हें सरकार द्वारा निर्धारित मजदूरी राशि दिए जाने हेतु प्रयास किया जाना चाहिए तथा साथ ही उद्योगों के निरीक्षण हेतु सरकार द्वारा नियुक्त किये गये निरीक्षकों द्वारा समय–समय पर इनका निरीक्षण कर उचित रिपोर्ट तैयार कर दी जानी चाहिए। जिससे इनकी समस्याओं का उचित निराकरण किया जा सके।

fu"d"kZ&काजू उद्योग में कार्यरत अध्ययनगत समूह की विवाहित महिलाएं परिवार की आर्थिक रूप से सहायता करने हेतु एवं अविवाहित महिलाएं स्वयं की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इस उद्योग में कार्य करती है परंतु समूह की विधवा एवं परित्यकता उत्तरदाता महिलाएं अपने एवं अपने बच्चों के भरण–पोषण के लिए मजबूरीवश यह कार्य करती है। क्षेत्र में काजू उद्योग के लगने से इन महिलाओं को उद्योग में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ है जिससे वे आर्थिक विकास में बराबर की भागीदारी देते हुए अपने घर व बच्चों की जिम्मेदारियां सम्भाल रही है साथ ही पुरूषों को बराबरी से सहयोग प्रदान करते हुए भावी पीढ़ी को शिक्षित व परिवार के आर्थिक विकास में अपनी भागीदारी का सफलतापूर्वक निर्वहन भी कर रही है।

lanHkZ xzUFk lwph

1. डॉब मारिस – मजदूरी 1969
2. कमलनाथ – ' विमन इन द वर्किंग फॉर इन इंडिया' इकोनॉमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली भाग–III,नंबर–31, अगस्त 3 पेज क्र. 1205
3. सिंह अरूण कुमार – जनजातिय समाज में स्त्रियां
4. कुरूक्षेत्र – मासिक पत्रिका फरवरी 2008
5. कुरूक्षेत्र – मासिक पत्रिका मार्च 2008